

HAPPY SCHOOL

VOLUME 1 - ISSUE 1, JANUARY 2018



A BI-ANNUAL MAGAZINE OF
GOVERNMENT MODEL PRIMARY SCHOOL GANGA BHOGPUR
YAMKESHWAR – PAURI GARHWAL

पत्रिका के बारे में

‘हैप्पी स्कूल’ राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर द्वारा प्रकाशित एक ऑनलाइन पत्रिका है। इस पत्रिका का उद्देश्य विद्यार्थियों व अध्यापकों में छुपी हुई लेखन प्रतिभा को उजागर कर समाज तक पहुंचाकर एक संवाद प्रक्रिया को जागृत करना है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त विचार लेखकों के अपने हैं। अतः यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक लेख में विद्यालय या सम्पादक मंडल अपने विचारों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

©2018, पत्रिका में प्रकाशित लेखों का श.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है। बिना किसी पूर्ण लिखित अनुमति के लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

समन्वयक – प्रदेश परियोजना कार्यालय
डा. के.एल. बिजल्वाण
जिला शिक्षा अधिकारी - प्राथमिक शिक्षा
श्री कुंवर सिंह रावत
खंड शिक्षा अधिकारी – यमकेश्वर
श्री अमित कोटियाल
संकुल समन्वयक - नीलकंठ
श्री नरेन्द्र प्रसाद कैथोला
प्रधानाध्यापक - श.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर
श्रीमती ताळमी पोखरियाल

सम्पादकीय समिति

अकादमिक सम्पादक
डा. अतुल बमराडा
मुख्य सम्पादक
रेखा पुरोहित
सम्पादक
आशा बिष्ट
सह-सम्पादक
धनेश्वरी रत्नडी

खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय

यमकेश्वर - पौड़ी गढ़वाल

दिनांक: 20/01/2018

संदेश

आपार हर्ष का विषय है कि राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर द्वारा “हैप्पी स्कूल” विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं समरत विद्यालय परिवार को शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

प्रत्येक बच्चा कहीं परिवार में, कहीं समाज में, कक्षा में विविध प्रकार की शिक्षाओं से घिरा होता है तथा उन्हें शिक्षित करने के बहुआयामी तरीके उन्हें नवाचारी बनाने की ओर अग्रसर करते हैं। हैप्पी स्कूल पत्रिका भी इसी क्रम में किया गया एक नवाचारी प्रयोग ही है जो कि बच्चों को स्वनिर्मित कठानी, कविता, चुटकले, पहेलियाँ आदि बनाने के लिए एक मंच प्रदान करता है। पत्रिका का एक भाग अध्यापक वर्ग को भी लेखन कला की ओर अग्रसर कर एक अवसर प्रदान करता है, जिसके माध्यम से वह अपने विचारों को जनमानस तक प्रेषित कर सकें व भविष्य में भी यह साहित्य प्रयोग में लाया जा सके।

अल्प संसाधनों का प्रयोग कर हैप्पी स्कूल पत्रिका का निर्माण किया गया है जिसे कि विभिन्न तकनीकी माध्यमों द्वारा डाउनलोड किया जा सकता है। पत्रिका तक पाठक वर्ग की आसान पहुँच विद्यालय व् सम्पादक मंडल की दूरगामी सोच को प्रदर्शित करती है।

मैं विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ व साथ ही समरत अध्यापकों को भविष्य में भी इसी प्रकार के नवाचारी प्रयोग करने का आह्वान करता हूँ।



श्री अमित कोटियाल

खंड शिक्षा अधिकारी, यमकेश्वर पौड़ी गढ़वाल

सम्पादकीय

शिक्षा का अर्थ केवल वस्तुओं या विभिन्न विषयों का ज्ञान मात्र नहीं है यदि अर्थ को यहाँ तक सीमित मान लिया जाये तो वह अज्ञान से कुछ ही अधिक हो सकता है और कई बार तो उससे भी अधिक भयावह परिणाम प्रस्तुत कर सकता है। ज्ञान की अथवा शिक्षा की सार्थकता वस्तुओं के ज्ञान के साथ-साथ अनुपयोगी और उपयोगी का विश्लेषण करने तथा उनमें से अनुपयोगी को त्यागने एवं उपादेय को ग्रहण करने की ट्रिट का विकास भी होना चाहिए तभी शिक्षा अपने सम्पूर्णता को प्राप्त होती है।

ज्ञान और आचरण में - बोध और विवेक में जो सामंजस्य प्रतुत कर सके उसे ही सही अर्थों में शिक्षा या विद्या कहा जा सकता है। जब यह सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता तो शिक्षा अधूरी ही कही जाएगी। आज के सन्दर्भ में देखें तो शिक्षा पद्धति इसी तरह की प्रवंचनाओं से पूर्ण है। छात्रों के सामने परीक्षा पास करने और डिग्री हासिल करने के अलावा कोई दूसरा लक्ष्य नहीं रहता। फलतः वह अपनी सभी प्रवृत्तियों का केन्द्र परीक्षा पास करना बना लेता है और जब यहीं एकमात्र लक्ष्य रह जाता है तो व्यक्तिव के अन्य पहलुओं पर स्वाभाविक ही विशेष ध्यान नहीं जाता। या यों भी कह सकते हूं कि अन्य पक्ष गौण हो जाते हैं।

इस स्थिति में जीवन-विकास की आधारशिला, नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा की जड़ें हिल जाना स्वाभाविक है। सर्वग्राही अनैतिकता के मूल में यदि शिक्षण पद्धति का यह दोष देखा जाए तो कोई अनुचित न होगा और जब सारे समाज के लगभग सभी वर्ग नैतिक मूल्यों की अपहेलना कर अनैतिकता का वातावरण विनिर्मित कर रहे हों तो छात्रों में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा पर दोहरी चोट पड़ती है।

इस स्थिति के लिए विद्यार्थी इतने दोषी नहीं हैं, जितनी कि शिक्षा-पद्धति। प्रचलित शिक्षण-पद्धति छात्रों के सामने कोई ध्येय, कोई आदर्श उपस्थित नहीं कर पाती या कहना चाहिए वह ध्येयहीनता के अंधकार में धकेलती है। तो उस स्थिति में जो ज्ञान जीवन को सुसज्जित और सुरक्षित बनाता है वह ज्ञान कहाँ उपलब्ध हो पाता है? कहा जा चुका है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व का सम्बन्ध विकास है। शिक्षा इसी उद्देश्य की ओर जरा भी उन्मुख हो तो ध्वंस की अपेक्षा सृजन की प्रेरणा ही जागेगी और ध्वंस का आयोजन करना भी पड़े तो वह सृजन की पृष्ठभूमि निर्मित करने के लिए ही अनिवार्य होगा।

इस संदर्भ को स्मृति में रखने के लिए प्रचलित शिक्षा-पद्धति में आवश्यक सुधार करना ही एकमात्र उपाय है और वह सुधार इस सिद्धांत को केन्द्रों में रखते हुए ही सम्भव है कि शिक्षा का उद्देश्य कोई सूचनाएं या जानकारियाँ देना मात्र नहीं है, वरन् व्यक्तित्व का सम्बन्ध विकास करना है।

इस अंक में

छात्र परिषिष्ठ

कविता		
आओ पेड़ लगाएं	सोनम शवत	3
जल बरस	वैशाली	3
चारों और गणित	नंदिनी शर्मा	4
अनुभव आधारित कहानी		
हरिपुर का हाट	आर्यन शर्मा	5
हाथी महाशय	कृष्ण रणाकोटी	6
विंध्यवासिनी माता के दर्शन	शिवांशु रणाकोटी	7
राजाजी की सैर	श्रद्धा पोखरियाल	8
पहेलियाँ		
पहेलियाँ का संसार	प्रियांशु शवत	9
चित्रकला		

अध्यापक परिषिष्ठ

कविता		
पर्यावरण	आशा बिष्ट	16
आवाज	अनुराधा रखाल	16
बन्दर	माधुरी काला	16
गिनती	रत्ना गौड़	17
बेटी	कमला शवत	17
काश हमारे पंख होते	जय प्रकाश शाह	18
नानी	मनोज काम्बोज	18
बादलों की गँूँज	रामेश्वरी शवत	19
छाए बादल	हेमलता काला	19
आपदा	रेखा पुरोहित	19
झम झम बूँदें	अंजना रत्नौड़ी	20
मेरी पेंसिल	धनेश्वरी रत्नौड़ी	20
अध्यापन में नवाचार		
विद्यालय की गतिविधियाँ		
छात्र उपलब्धि		

आओ पेड़ लगाएं

सोनम शवत | कक्षा 3

चलो हम एक पेड़ लगायें
दुनिया को हरा भरा बनाएं.
चारों ओर फैलाएं हरियाली
सबके जीवन में लायें खुशहाली.
प्रदूषण ना फैले धरती पर
खर्ब से सुंदर हो सबका घर.



जल बरस

वैशाली | कक्षा 3

घड-घड नभ कडक-कडक
नठर-नठर, शठर-शठर
सब जगह, जल बरस
झाम-झाम झाम-झाम जल बरस
कमल मन हरस
सब तरफ जल बरस
झाम-झाम झाम-झाम
तड़-तड़ तड़-तड़
रह-रह कर जल बरस



चारों और गणित

नंदिनी शर्मा | कक्षा 3

गणित हंसाए गोलू को
 गोलू खेले खेल
 आओ हाथ मिलाएं इससे
 गणित से कर लें मेल.
 गणित से कर लें मेल
 बनाये ABC की रेल
 अ, आ, इ, ई और गिनती की
 आओ बना लें बेल.
 आओ बना लें बेल
 सीखे गिनती जोड़ घटाना
 बुना भाग से कर लो यारी
 फिर ना करोगे ना ना ना.
 फिर ना करोगे ना ना ना
 गणित से सुलझेंगे बच्चे
 ल.स., म.स., मिन्न, दशमलव
 लगने लगेंगे अच्छे.
 लगने लगेंगे अच्छे
 कर लो गणित से पक्की यारी
 देखो अपने इधर-उधर तुम
 गणित हैं बिखरी सारी.



अनुभव आधारित कहानियाँ

हरिपुर का हाट

आर्यन शर्मा | कक्षा 4

मैं गर्मी की छुट्टियों में हरिपुर गया था, जो कि हरिद्वार जिले में स्थित है। वहाँ पर मैंने बहुत सारे मन्दिर देखे, जिसमें कि एक मंदिर मुझे बहुत अद्भुत लगा। उस मन्दिर के संग्रहालय में कुछ समुद्री जानवरों को रखा गया था जो कि बहुत ही लुभावने थे। शाम के समय मैं अपनी मौसी के साथ रथानीय हाट में भी गया, जहाँ पर कि बहुत भीड़ थी। वहाँ पर मेले जैसे माहौल था। जहाँ एक ओर कुछ लोग खरीददारी करने में व्यस्त थे; वहीं दूसरी ओर कुछ अन्य लोग चाउमीन, टिक्की, मोमो, पकोड़े और जलेबी खाने में व्यस्त थे। मैंने भी वहाँ पर अपनी मौसी के साथ टिक्की खाई और उसके बाद अपनी बाहिन के लिए खिलौने भी खरीदे। इस वर्ष भी मेरी माँ ने मुझे कहा है कि अगर मैं अपनी कक्षा में प्रथम आया तो मुझे फिर से गर्मी की छुट्टियों में हरिपुर भेजेंगी।



हाथी महाशय

कृष्ण रणाकोटी | कक्षा 4

सर्दी का मौसम शुरू ही हुआ था। फसल की बुवाई के दो महीने बाद हमारे घर के पास वाले खेत में लगभग 6 बजे एक बड़ा हाथी आकर गेहूं की फसल खाने लगा। मेरे शोर मचाने पर हाथी महाशय को बहुत गुस्सा आ गया और चिंधाड़ते हुए हमारे घर के दरवाजे की ओर भागा और वहाँ खड़ा हो गया। मैं भयभीत हो गया और चुपके से खिड़की से हाथी को देखने लगा कि वह क्या कर रहा है। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि हाथी बहुत ही चतुर जानवर होता है, क्योंकि जैसे ही मैं खिड़की के पास पहुंचा - हाथी भी तुरंत खिड़की की तरफ लपका और एक पल को तो मुझे लगा कि हाथी मुझे खा ही जाएगा। उस दिन तो मुझे खिड़की में लगी सरियों ने बचा लिया। फिर मैंने हाथी महाशय को प्रणाम किया और हाथी महाराज सीधे राजाजी के जंगलों की ओर लौट गये।



विंध्यवासिनी माता के दर्शन

शिवांशु रणाकोटी | कक्षा 4

नवरात्रि के मौके पर मैं अपने परिवार के साथ विंध्यवासिनी माता के दर्शन के लिए गया। वहाँ का नज़ारा बहुत ही मनमोहक था। चारों ओर लोग रंग-बिरंगे कपड़ों में माता यानी के दर्शनों के लिए दूर-दूर से आ रहे थे। रस्ते में जाते हुए मैंने हाथी, नीलगाय, हिरन और बाघ भी देखे। विंध्यवासिनी में चारों ओर पानी ही पानी दिख रहा था और यही पानी हमारे गाँव कोडिया में आकर बीन नदी के रूप में जाना जाता है। फसलों के लिए यह पानी वरदान समान है क्योंकि हमारे गाँव की खुशहाली का राज यही पानी है; जिससे कि वर्ष भर खेतों को पानी की कोई भी कमी नहीं होती।



वहाँ पहुँचने के बाद हम मनिदर में गये जो कि बहुत ही ऊचे स्थान पर था। माता यानी के दर्शन के बाद मैंने समरत भक्तों को प्रसाद दिया और फिर मैंने अपने परिवार के साथ नाश्ता किया। फिर कुछ देर वहाँ धूमने के बाद हम शाम को लगभग चार बजे घर के लिए लौटे। यह सफर मुझे बहुत अच्छा लगा।



राजाजी की सैर

श्रद्धा पोखरियाल | कक्षा ३

सितम्बर माह में हमे एक पृथ्वी कार्यक्रम के दौरान विद्यालय व WWF के द्वारा जंगल की सैर के लिए चीला ले जाया गया। चीला पहुँचने के बाद हमे वन-अधिकारियों व अध्यापकों के साथ राजाजी राष्ट्रीय उद्यान में लगभग 30 किमी अंदर गये। वहां पर हमने विभिन्न प्रकार के पशु – पक्षी व जीव-जन्तु भी देखे। मैरे लिए यह पहला मौका था जब मैंने हाथी, हिरन व नीलगाय को इतने पास से देखा। WWF के कार्यक्रम समन्वयक पंकज जोशी सर द्वारा हमे बाघ के पैरों के निशान भी दिखाए। उन्होंने हमे यह भी बताया कि दुनिया में जितने भी बाघ हैं उन सभी के पंजों के निशान अलग-अलग होते हैं; जिससे की उनकी

गिनती करने में मदद मिलती है। मुझे जंगल का वातावरण बहुत अच्छा लगा। WWF द्वारा हमें लंच बॉक्स भी दिए गये। पोखरियाल मैडम ने हमे बताया है कि इस वर्ष भी हमे जंगल की सैर पर ले जाया जाएगा, जिससे कि हम अपने पर्यावरण के बारे में ज्यादा जानकारियाँ प्राप्त कर सकें।



पहेलियों का संसार

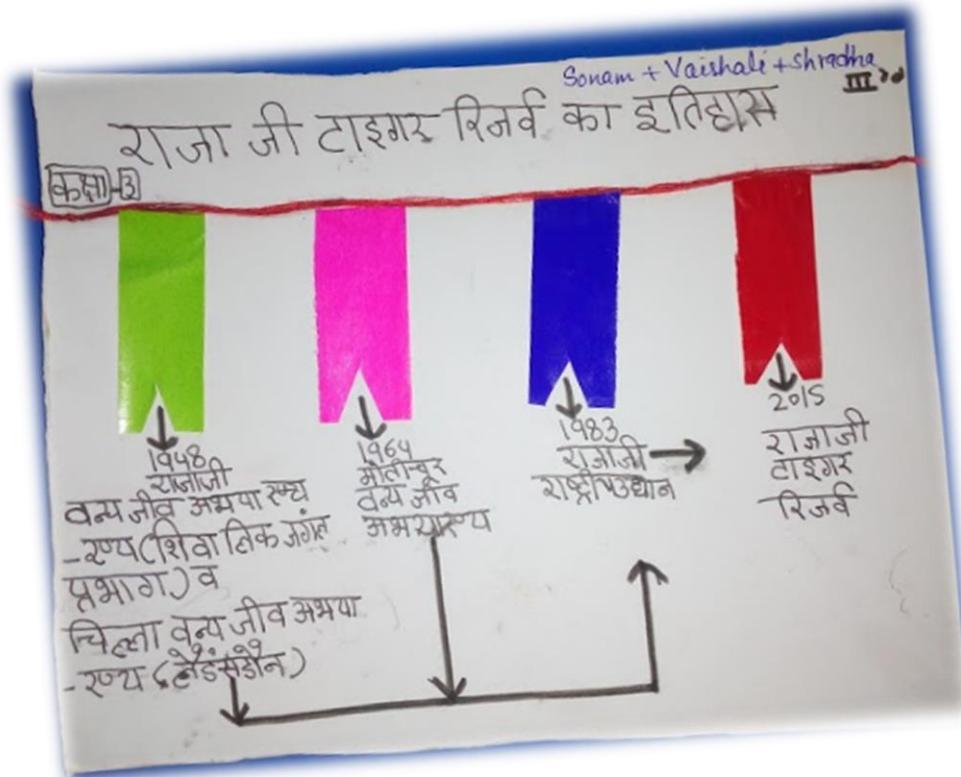
प्रियांशु यावत | कक्षा 3

एक पक्षी ऐसा देखा,
 ताल किनारे रहता था,
 मुँह से आग उगलता था,
 दुम से पानी पीता था (दिया बाती)
 परकोटा तो हरा है,
 भीतर लाल मकान,
 चार-पांच नहीं कई हैं अंदर बैठे,
 जैसे काले कोई जवान (तरबूज)
 मैं हूँ जल का विशाल भंडार,
 नदियाँ करती मुझसे प्यार,
 नमक है बनता मेरे जल से,
 झट से नाम बताओ यार (समन्दर)
 चार पैर की एक सवारी,
 थके हुए को लगती प्यारी,
 ढेती है आराम सभी को,
 लकड़ी की यह राजकुमारी (चारपाई)

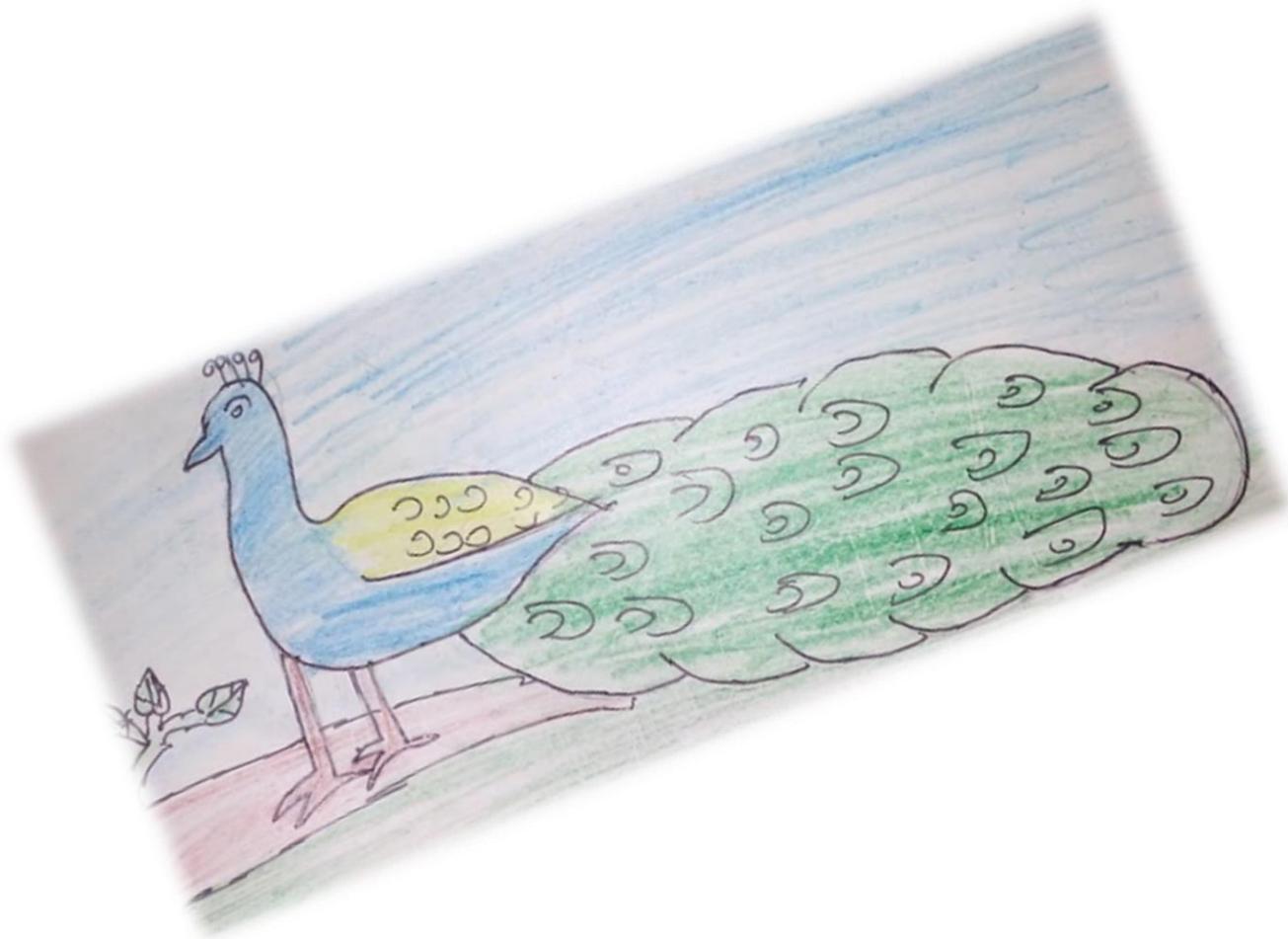
	+		=	8
	+		=	6
	-		=	6
	=		=	
13				8

	+		=	10		=
	+		=	6		=
	+		=	5		=

चित्रकला





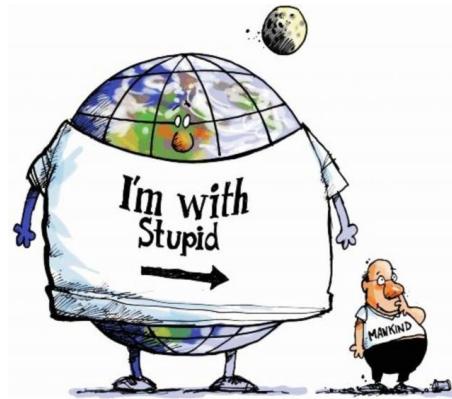


अध्यापक परिशिष्ठ

पर्यावरण

आशा बिष्ट – या आ प्रा वि गंगा भोगपुर

थैली फेंको ऐपर फेंको
 जलदी फेंको करो ना देर
 बन ना जाए पहाड़ सा ढेर
 तुम चाहे तो कर सकते हो
 इन चीजों से बड़ा कमाल
 बना सकते हो खेल खिलौने
 और लगा सकते हो स्टाल



आवाज

अनुराधा रयाल

ध्यान लगाकर सुनती हूँ तो
 आवाज मुझे ये आती है
 कभी माँ की चूड़ी की छन-छन
 कभी मंद पवन की सन-सन
 दिल डर जाता है सुनकर आसमान की गड-गड
 तभी सुनती हूँ दाढ़ी की बड़-बड़
 करती खट-खट दाढ़ाजी की लाठी
 गर्झ-गर्झ करती आटा चक्की
 टन-टन बजती स्कूल की घंटी
 धम-धम दौड़ते राजू बंटी.



बन्दर

माधुरी काला – या प्रा वि मराल

‘ब’ से देखो आया बन्दर
 बन्दर भागा घर के अंदर
 उसने केले तीन उठाए
 छील-छील कर तीनों खाए



गिनती रत्ना गोड़

एक नाव में थे दो नाविक, और तीन पतवार;
 आसमान में नीली पीली, उडती चिड़िया चार;
 पांच मेंढक नाव के आगे, देखो रहे हैं तैर;
 उनके पीछे केकड़ा, देखो उसके हैं छह पैर;
 सात मछलियाँ पानी में, बार-बार गोता हैं खाती;
 आठ डालियाँ काई की, झूम-झूम लहराती;
 चुन्जी हो गयी नौ साल की, रोज वो गाना गाती;
 नौ के बाद आये दस, कविता हो गयी पूरी बस.



बेटी कमला रावत

नन्ही-नन्ही कलियाँ हम,
 नये-नये फूल खिलाएंगे हम,
 शिक्षक का हो साथ हमारा,
 जग में होगा नाम हमारा,
 बेटा-बेटी एक समान,
 पूरी शिक्षा पूरा ज्ञान,
 देश बनेगा तभी महान,
 जब देंगे इनको सम्मान.

बेटी बचाओ



बेटी पढ़ाओ

काश हमारे पंख होते

जय प्रकाश शाह – रा प्रा वि पटना

काश हमारे पंख होते
दूर गगन तक हम जाते
कौआ चील कबूतर भी
हमारे मित्र बन जाते.
काश हमारे पंख होते
तो स्कूल उड़ कर आते
बादलों के साथ-साथ
नील गगन को छू आते
चंदा के गाँव पहुँचते
हंस खेलकर वापस आते.
काश हमारे पंख होते
तो पैदल चलने से बच जाते
जैसे ही छुट्टी होती
फुर से उड़कर घर पहुँच जाते.



नानी

मनोज काम्बोज – रा प्रा वि कुमार्थ

नानी से अब कोई सुनता नहीं कहानी
मोबाईल के आने से हुई रिटायर नानी
अब कहानी अपनी किसे सुनाये नानी
टी.वी. को हम भी देखे, खुद भी देखे नानी.



बादलों की गँूज रामेश्वरी रावत – या प्रा वि भौंन

बादलों की गँूज से,
लगता है मुझको डर
छोड़-छाड़ कर खेल खिलौने ,
सीधे भागूं घर.



छाए बादल ठेमलता काला

आसमान में छाए बादल,
सफेद-काले-भूरे बादल,
युमड़-युमड़ कर आते बादल,
आपस में टकराते बादल,
आसमान में गूंज-गूंजकर,
हम सबको डराते बादल.

आपदा रेखा पुरोहित – या आ प्रा वि गंगा भोगपु

बादलों की गँूज, जब भी सुनाई देती;
मन है धबराता, वह रात है याद आती;
भयंकर हुआ था धमाका, जब था जग सोया;
सब कुछ बहा ले गया, सब कुछ था मैंने खोया
आज भी दहशत होती, जब ये आवाज आती;
सारा दृश्य पुनः मेरे, मन को है दहलाती.



झाम-झाम बूँदें अंजना रत्नडी – या प्रा वि कोटा

हुई गर्जना गड-गड करके, धक-धक मेरा दिल घबराया;
घर से बाहर आकर देखा, आसमान में बादल छाया;
झाम-झाम, झाम-झाम बूँदें बरसे, मन को मेरे हर्षाती;
अम्मा मैं भी बाहर भीगूँ बारिशा मुझको बहुत है आती.

मेरी पेंसिल

धनोश्वरी रत्नडी - या आ प्रा वि गंगा भोगपुर

लाल रंग की मेरी पेंसिल
लम्बी और नुकीली पेंसिल
लिखने में हैं सबसे आने
कापी पर हैं सरपट भाने
तुम भी ऐसी पेंसिल लाओ
अच्छे अक्षर तुम बनाओ
पढ़-लिखकर तुम कुछ बन जाओ
जग में अपना नाम कमाओ.



विद्यालय की गतिविधियाँ



एक पृथ्वी
कार्यक्रम
के दौरान
अध्यापक
प्रशिक्षण में
प्रतिभाग



पतंजलि योग
संस्थान
हरिद्वार द्वारा
योगाभ्यास
शिविर





उड़ान कार्यक्रम में
विज्ञान व गणित
प्रतिदर्श प्रस्तुत
करते छात्र



महानिदेशक
विद्यालयी शिक्षा
का विद्यालय
परिसर में
स्वागत

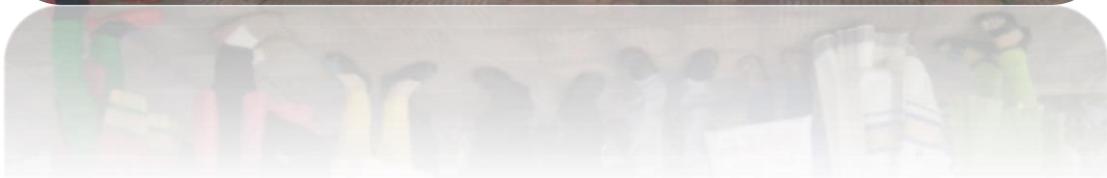




खंड शिक्षा
अधिकारी महोदय
द्वारा गणवेश
वितरण



गंगा रिसोर्ट
ऋषिकेश में 'एक
पृथ्वी' कार्यक्रम
में प्रतिभाग





WWF भारत द्वारा
आयोजित वित्रकला
प्रतियोगिता में
प्रतिभाग करते छात्र-
छात्राएं

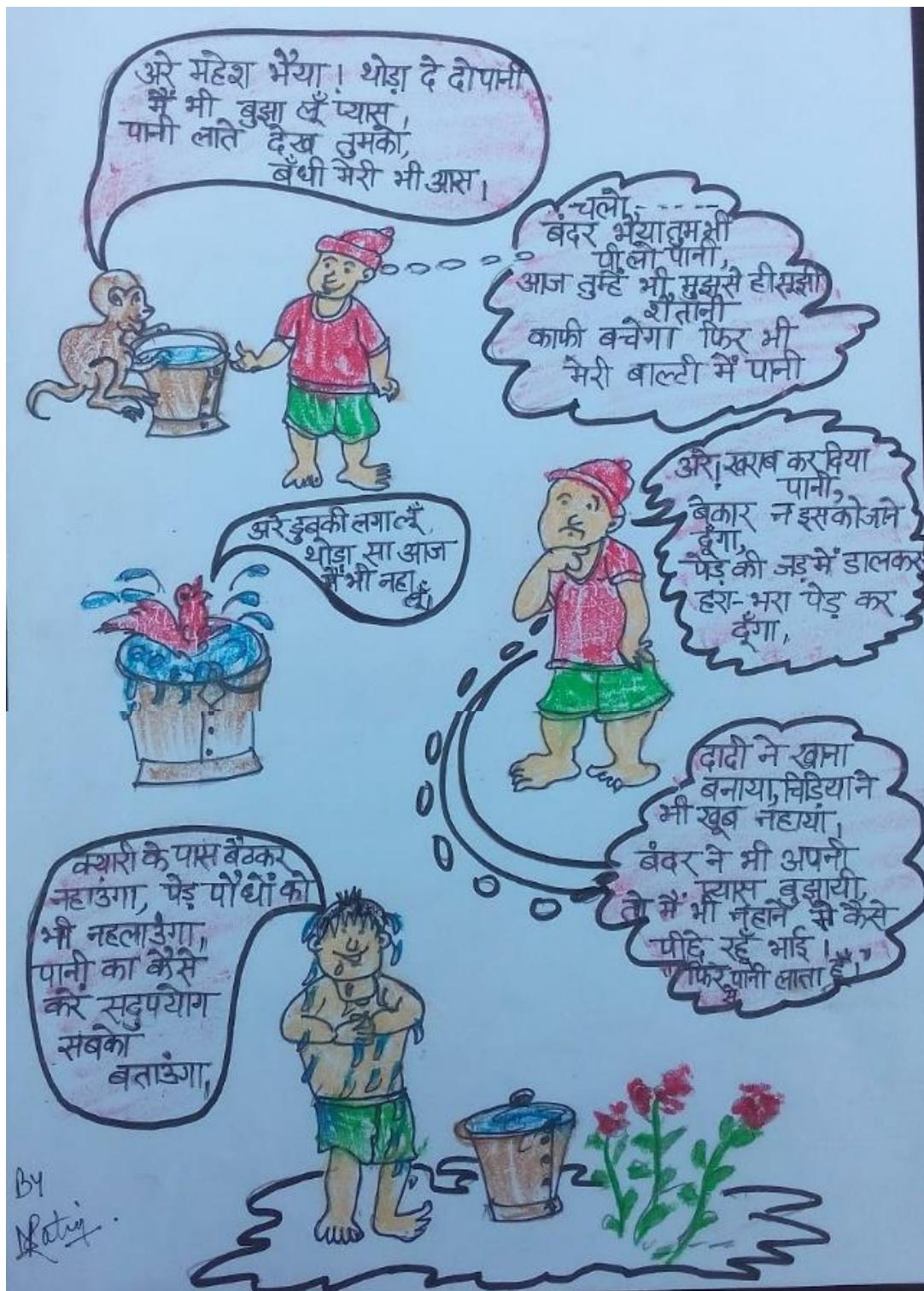
संकुल स्तरीय क्रीड़ा
प्रतियोगिता में
प्रतिभाग - संकुल केंद्र
नीलकंठ



गंगा रिसोर्ट
ऋषिकेश में
चाय पर
पर्यावरणीय
चर्चा-परिचर्चा

अध्यापन में नवाचार





घं	टा			बा
6	उ	न	ती	स
7	3	9	2	सा ठ
3	6	11	6	सा
4	6	0	2	10 8 ती त
5	3	0	0	न

बारे से दोषे

- ① घड़ी में सबसे धौरी सुई होती है, (शब्द) –
- ② एक मिनट में कितने सेकण्ड होते हैं, (शब्द) –
- ③ एक वर्ष में दिन होते हैं (अंक) –
- ④ एक घण्टे में कितने मिनट होते हैं (अंक) –
- ⑤ अप्रैल माह में दिनों की संख्या (अंक) –
- ⑥ लीप वर्ष में फरवरी माह में कितने दिन होते हैं (शब्द) –

अपर से नीचे

- ⑦ एक घण्टे में कितने सेकण्ड होते हैं (अंक) –
- ⑧ साधारणतया घड़ी में सुईओं की संख्या है (शब्द) –
- ⑨ लीप वर्ष में दिनों की संख्या होती है (अंक) –
- ⑩ ५ दर्जन = (अंक)
- ⑪ 1 वर्ष = — सप्ताह (अंक)
- ⑫ 1 सप्ताह = — दिन (शब्द)
- ⑬ $31 \times 2 =$ — (शब्द)

पूछतां प्राप्ति द्वारा समझ की समझ

Class - IIIrd

पाठ-१७ देश हमारा (विवित)

खेल - खेल में शिक्षा

मोर		सर्दी		पर्वत	
	गंगा		कोयल		धान
दिल्ली		मक्का		तौता	
	भारत		चेना		गोदूँ
धरती		आम		कमल	
	हिमालय		पपीहा		झारना

1. प्र० - भारत का राष्ट्रीय पक्षी क्या है?

2. प्र० - हमें ठंड किस ओर सभ में लगती है?

3. प्र० - देश की फसलें कौन-कौन सी हैं?

4. प्र० - देश में कौन-कौन से पक्षी पोष जाते हैं?

5. प्र० - भारत के उत्तर में कौन सा पर्वत है?

6. प्र० - भारत का राष्ट्रीय फूल कौन सा है?

7. प्र० - मिठू - मिठू कौन सा पक्षी बोलता है?

8. प्र० - ऊसमान का विलोम क्या है?

9. प्र० - हमारा राष्ट्रीय फूल क्या है?

जाशा (बिट्टा)
स० ज० (हिन्दी)
रा० जा० प्रा० वि० - गोलमेशु



छात्र उपलब्धि



ISHITA
RANAKOTI

SCORE: 100%

ANURAG &
UJJWAL

SCORE: 98.6%



SONAM
RAWAT

SCORE: 97.14%



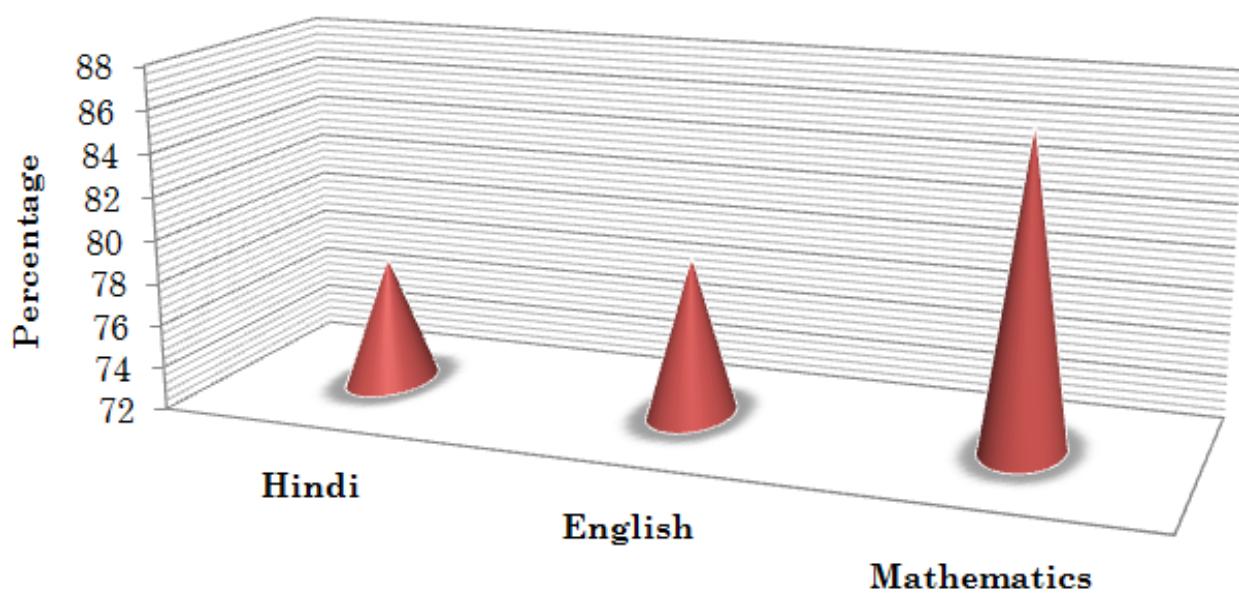
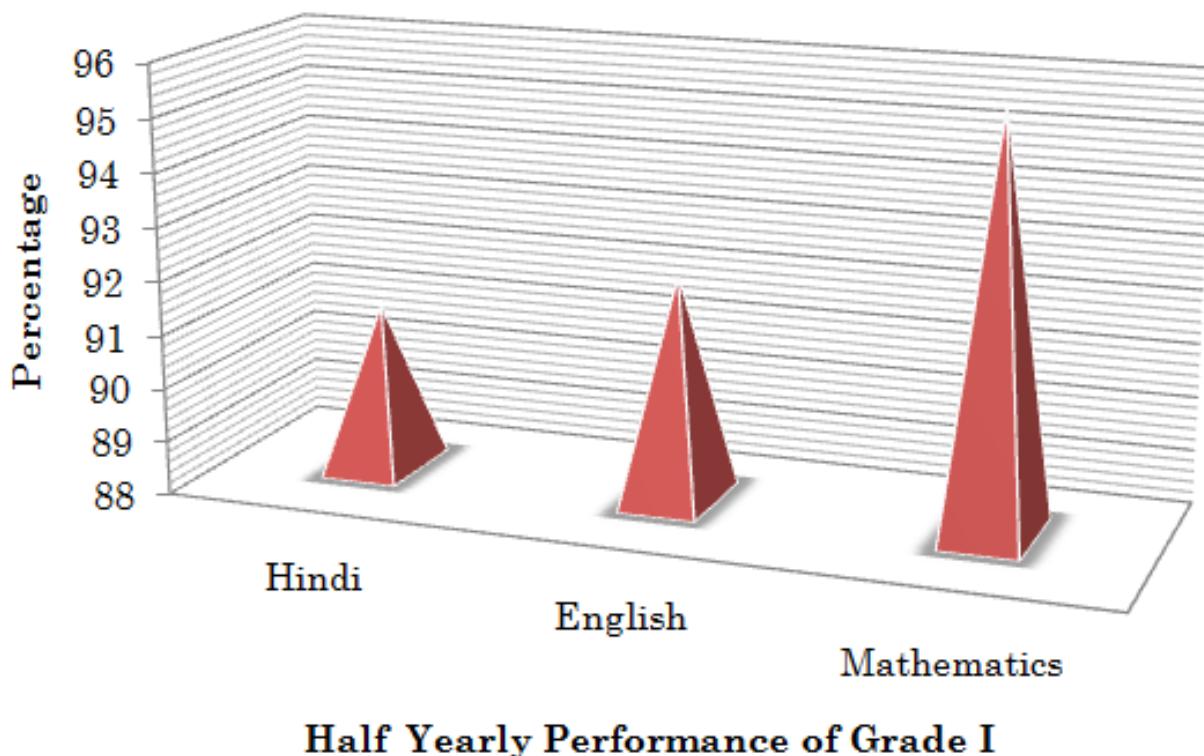
SHIVANSHU

SCORE: 86.9%

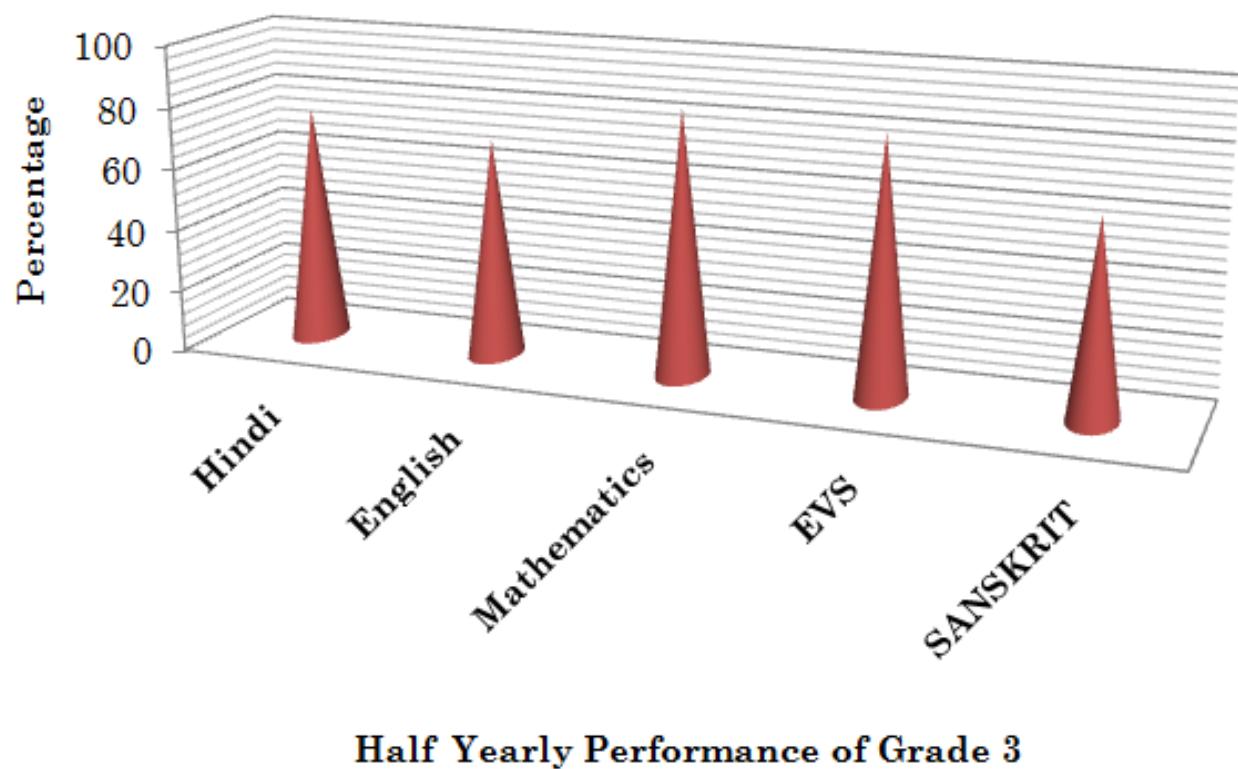
RISHABH
KANDWAL

SCORE: 93.14%

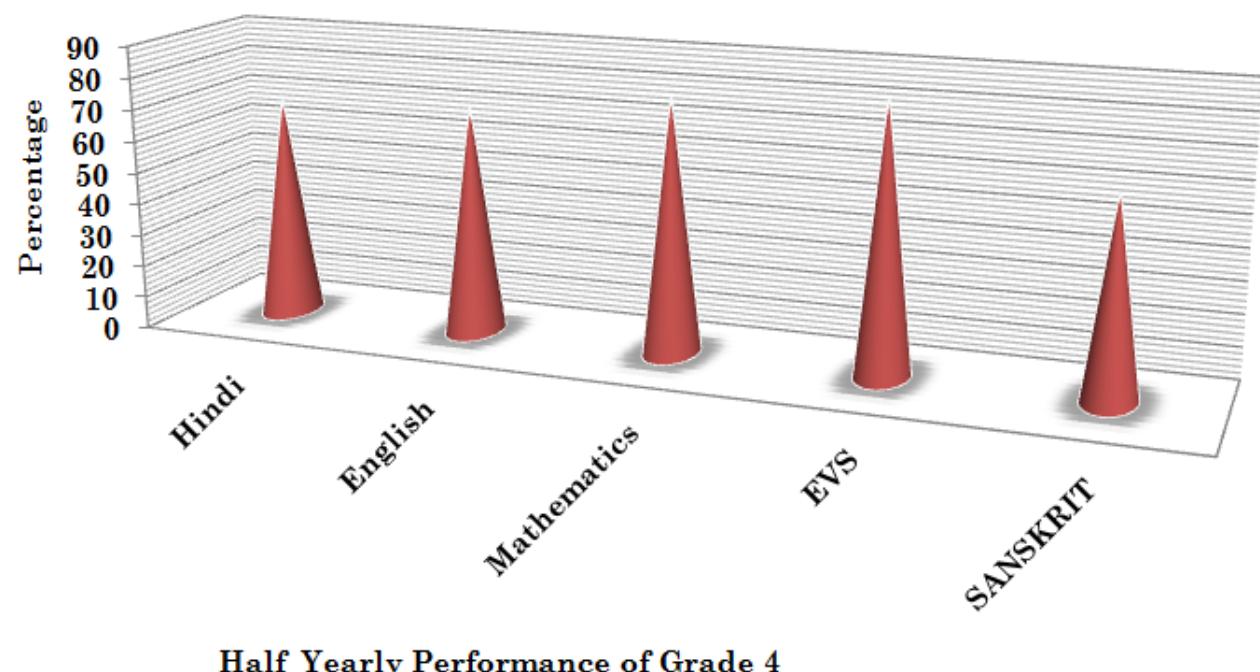




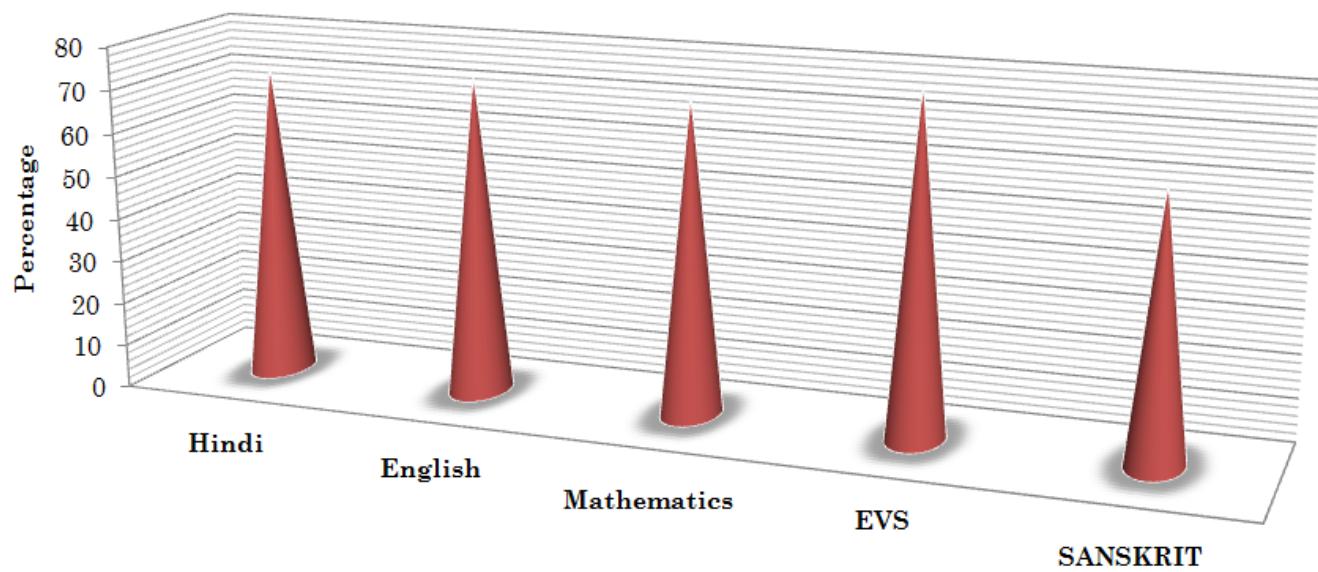
Half Yearly Performance of Grade 2



Half Yearly Performance of Grade 3



Half Yearly Performance of Grade 4



Half Yearly Performance of Grade 5



CONTACT

GOVERNMENT MODEL PRIMARY SCHOOL GANGA BHOGPUR

PO GANGA BHOGPUR MALLA, YAMKESHWAR

PAURI GARHWAL – 249306

gmpsgbm@gmail.com (E) | www.gmpsgbm.wixsite.com/gmpsgb (W)